जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- ४३

भावना की प्रबल शक्ति

(प्रवचन)

भावना की प्रबल शक्ति

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥

शक्ति का स्रोत है भगवान

मित्रो! मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा लाभ भगवान को प्राप्त करना है। मैं नहीं समझता कि इससे भी बड़ा कोई लाभ हो सकता है। असल में जितने भी लाभ हैं, जितनी भी क्षमताएँ हैं, जितनी भी सामर्थ्य हैं, उन सबका केंद्र एक शक्ति का स्रोत है, जिसको हम भगवान कहते हैं। जनरेटर कहाँ लगे हुए हैं? यहाँ से बहुत दूर रुड़की के पास बहदराबाद पथरी नाम की जगह है, वहाँ बिजलीघर बने हुए हैं। यहाँ जो बत्तियाँ जल रही हैं, माइक चल रहे हैं, एम्प्लीफायर में से बोल रहे हैं, वह सारी बिजली वहीं से आ रही है। इसी तरह मनुष्य के पास जो भी चीज है, सारे के सारे विश्व में, जड़

में चेतना का जो चमत्कार है, वह भगवान का है। चेतना एक ही है, भगवान के पास। उसके अंश जितने भी हमारे पास आ जाते हैं उसके हिसाब से हम मजबूत, ताकतवर, संपत्तिवान और ज्योतिर्वान बन जाते हैं। भगवान की क्षमताएँ जितनी हमारे भीतर कम होती हैं, उतने ही हम कमजोर बने रहते हैं, दुर्बल बने रहते हैं, दीन-दुर्बल बने रहते हैं। असहाय बने रहते हैं और जब ये क्षमताएँ हमारे भीतर पर्याप्त मात्रा में इकट्ठी हो जाती हैं, तब फिर हम देवपुरुष बन जाते हैं, फिर हम अवतार हो जाते हैं। फिर हम महामानव हो जाते हैं, फिर हम देवात्मा बन जाते हैं और तब अंत में हम भगवान हो जाते हैं। कब ? जब भगवान की शक्तियाँ हमारे पास आ जाती हैं। अंदर समाविष्ट हो जाती हैं।

सामर्थ्य की कीमत पर संपदा मिलती है

इसलिए करना क्या है ? मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा पुरुषार्थ, परम पुरुषार्थ यह माना गया है कि हम ऐसी शक्ति के साथ में अपना संबंध मिला लें,

जहाँ से जा करके प्रचुर मात्रा में सामर्थ्य और उसके साथ-साथ में संपत्ति मिलती रहे। सामर्थ्य की कीमत है—संपत्ति। आपके शरीर में सामर्थ्य है तो मजदूरी कीजिए और पैसा कमाइए। आपका चेहरा अच्छा है, हट्टे-कट्टे हैं, जवान हैं। हम ब्याह करेंगे? अच्छा साहब! आप ब्याह कर लीजिए, कोई हर्ज नहीं, परंतु यदि आपकी सामर्थ्य चली जाए, बुढ़ापे में सब बाल झड़ जाएँ और तब कहें कि हमारा ब्याह कर दो साहब! तब लोग कहेंगे कि चल-चल बुड्ढे को शरम भी नहीं आती है। अरे साहब! जैसे और आदमी, वैसे वे हैं। दोनों ही कमाते हैं। देखिए उसका भी तो ब्याह हो गया है, हमारा भी ब्याह करा दीजिए। नहीं आपका ब्याह नहीं हो सकता, क्योंकि आप बुड्ढे हो गए हैं। आपके झुर्रियाँ पड़ गई हैं, आपके दाँत उखड़ गए हैं। आपका चेहरा बुड्ढा हो गया है। अब आपका ब्याह नहीं हो सकता। नहीं साहब! हमारा भी ब्याह रचा दीजिए। नहीं बेटे, सामर्थ्य ही सब कुछ है। सामर्थ्य की कीमत पर संपत्तियाँ आती

हैं और दुनिया में सामर्थ्य का पुंज एक ही है—भगवान। हम उसी की सामर्थ्य से सब काम करते हैं। दुनिया में जितना भी पानी भरा हुआ है, सब समुद्र की अमानत है। समुद्र में से बादलों में आता है। बादलों में से नदी और तालाब में भर जाता है। सारी की सारी सामर्थ्य भगवान में भरी पड़ी हैं। भगवान की सामर्थ्यों में से हम जितना अंश अपने भीतर ग्रहण कर लेते हैं, उतने ही अंशों में हम सामर्थ्यों के धनी होते हैं और धनी के हिसाब से हमारे पास वह संपत्ति है, जिसको आप चाहते हैं।

मित्रो! आप क्या चाहते हैं। संपत्ति ही चाहते थे न? हाँ! संपत्ति चाहते थे तो आपको यह नहीं मालूम कि संपत्ति किसे दी जाती है? आप मिठाई खरीदना चाहते हैं ना? तो आप मिठाई किससे खरीदेंगे? नोट लाइए, क्वाइन लाइए। क्वाइन—पैसे का क्या करेंगे? हम तो ऐसे ही खरीदेंगे। नहीं बेटे! पहलें रुपए लेकर आओ, तब चीज मिलेगी। सामर्थ्य की कीमत पर संपत्ति खरीदी जा सकती है, वस्तुएँ

खरीदी जा सकती हैं। सामर्थ्य है तो वस्तुएँ आपकी अपनी हो जाती हैं। सामर्थ्य कहाँ रहती है। बेटे! कहीं नहीं रहती है। दुनिया में वह एक ही जगह रहती है और कहीं सामर्थ्य नहीं है। उस सामर्थ्य को प्राप्त करने के लिए क्या करना पड़ेगा? कैसे करना पड़ेगा? इसी विधि का नाम अध्यात्म है।

अध्यात्म की शुरुआत यहाँ से

अध्यात्म को हम दो हिस्सों में बाँट सकते हैं। बच्चों को अध्यात्म हम बताते हैं, वह दो चीजों से हम पढ़ाते हैं। एक का नाम है—पूजा, एक का नाम है—पाठ। बालकों की शिक्षा हम यहाँ से आरंभ करते हैं। अच्छा साहब! पूजा क्या होती है और पाठ क्या होता है? बेटे! जबान से जो कुछ भी उच्चारण किया जाता है, उसका नाम पाठ है। मसलन आप जप करते हैं तो वो पाठ हो गया। जब आप रामायण पढ़ेंगे, तब हम उसे पाठ कहेंगे। जीभ से जो कुछ भी बोला जाएगा, जीभ से जो कुछ भी उच्चारण किया जाएगा, वो सब पाठ में आ जाएगा और पूजा में क्या आएगा? पूजा में

शारीरिक क्रियाएँ एक और वस्तुएँ दो आती हैं। इन दोनों को हम पूजा में शुमार करेंगे। जैसे आप आरती उतारते हैं। आरती में हाथों को चलाना पड़ता है और उसमें धूपबत्ती रखनी पड़ती है, दीपक रखना पड़ता है और घी जलाना पड़ता है, फूल चढ़ाना पड़ता है। वस्तुओं और क्रियाओं दोनों को जब मिला देते हैं तो यह क्या हो जाता है? तो यह पूजा हो जाती है।

मित्रो! पूजा और पाठ आरंभिक विद्यार्थी को हम यही सिखाते हैं। खड़िया और पट्टी ले करके बच्चों को हम यही सिखाते हैं। इससे पहले पढ़ाई आरंभ नहीं हो सकती। पूजा और पाठ दोनों आवश्यक हैं। बेटे! मैं पूजा और पाठ का मखौल नहीं उड़ाता, कलम और पट्टी का मखौल नहीं उड़ाता। उड़ाऊँगा तभी, जब तू एम० ए० का विद्यार्थी होगा और जब खड़िया, मिट्टी का बुद्दका और पट्टी लेकर आएगा, तब मैं मखौल उड़ा सकता हूँ। आज तो मैं कैसे उड़ाऊँगा? आज तो मैं कहूँगा कि पट्टी लाइए और मैं तुझे बताऊँगा। बेटे! पूजा

और पाठ मैंने जिंदगी भर सिखाए हैं और अभी जिंदगी भर सिखाऊँगा। गुरु जी! उस दिन तो आप पूजा-पाठ का मखौल उड़ाते थे। बेटे! मखौल उड़ाता था तब, जब मैंने यह समझ लिया था कि तू एम.एस-सी. का विद्यार्थी है, तब मैंने तुझसे यह कहा था कि बेटे! फाउन्टेन पेन और कॉपी ले करके आना। अब तू जवान है, इसलिए जवान के ढंग से यह कहता हूँ कि तुझे कॉपी की जरूरत है पेन की जरूरत है। अब तुझे पट्टी की जरूरत नहीं है। तब तू बच्चा था, इसलिए बच्चे के ढंग से पढ़ाया था। अब अगर तू पट्टी और खड़िया ले करके आएगा तो मखौल उड़ा सकता हूँ।

पूजा-पाठ प्रारंभिक कक्षाएँ

साथियो! पूजा-पाठ प्रारंभिक है और आवश्यक है। वह जिंदा रहना चाहिए और जिंदा रखना है। पूजा और पाठ की प्रक्रिया को मैं दुनिया से नष्ट नहीं होने दे सकता। क्यों? क्योंकि यह सारा संसार अभी बालकों से ही भरा पड़ा है।

शुरुआत हमको वहीं से करनी पड़ेगी। आगे चलना तो वहीं से पड़ेगा।

समझदारी आने पर अगला पाठ

मित्रो! जब आप जानकार हो जाएँगे, समझदार हो जाएँगे, जब आप समझदारी में प्रवेश करना शुरू करेंगे, तब मैं आपको वास्तविकता समझाऊँगा। तब मैं आपसे यह कहूँगा कि आपको क्रियायोग के साथ-साथ भावयोग का समन्वय करना चाहिए। पूजा और पाठ का विकसित स्वरूप योग और तप हैं। पूजा-पाठ के साथ-साथ आपको इन दोनों का भी समन्वय करना चाहिए। योग किसे कहते हैं। योग को क्रिया के रूप में जब आप मुझसे पूछताछ करना शुरू करेंगे, तब मैं उन बातों को बताना शुरू करूँगा। कौन सी बात? वही नेति, धोति, वस्ति, वज्रोली, कपालभाति आदि ये सारी बातें आपको बता सकता हूँ। कब? जब आप मुझसे क्रिया के रूप में पूछेंगे तब, लेकिन अगर आप मुझसे यह पूछेंगे कि आप इसकी फिलॉसफी बताइए, इसके कारण बताइए, इसकी

वजह बताइए, तब मैं फिर दूसरे तरीके से आपको समझाना शुरू करूँगा। फिर मैं योग की व्याख्या क्रियाकृत्यों के रूप में नहीं कर सकता, फिर मैं आपको न्योली की शिक्षा नहीं दे सकता। फिर मैं आपको सर्वांगासन की शिक्षा नहीं दे सकता। शीर्षासन की शिक्षा दे करके यह नहीं कह सकता कि आपने यह विधि सीखी कि नहीं सीखी। आपने योगतंत्र की विधि सीखी, यह नहीं कहूँगा।

भाव-भूमिका में प्रवेश, परमात्मा से योग

मित्रो! फिर मैं यह कहूँगा कि भाव-भूमिका में प्रवेश करने के पश्चात जब योग की व्याख्या की जाती है तो उसका मतलब होता है—जोड़ देना। योग मीन्स जोड़ देना। किसके साथ जोड़ देना, भगवान के साथ जोड़ देना। भगवान के साथ जब हम अपने आप को जोड़ देते हैं, तब उसका नाम 'योग' होता है। आपको जो हम उपासना सिखाते हैं, उसका भी मतलब वही होता है। उपासना का अर्थ क्या होता है? शब्दकोशों में 'उप' कहते हैं पास को और

'आसन' माने बैठने को कहते हैं। पास-पास बैठ जाने का अर्थ उपासना होता है, जो प्रार्थना से एक कदम आगे है। भगवान के पास बैठ जाना, यह शुरुआत है और दोनों का समन्वित हो जाना, दोनों का मिल जाना, दोनों का जुड़ जाना, दोनों का एकाकार हो जाना—योग है। योग का अर्थ, भावनात्मक अर्थ, फिलॉसफी के साथ होता है—मिल जाना। कैसे मिल जाना? क्या भगवान के साथ मनुष्य को मिलाया जा सकता है? हाँ बेटे! मिलाया जा सकता है। भगवान के साथ हम उसी तरीके से मिल सकते हैं जैसे दो चीजें मिल करके एक हो जाती हैं। उसी तरीके से हम और भगवान एक हो सकते हैं। अर्थात या तो भगवान हमारे जैसा होगा, या फिर हम भगवान जैसे हो जाएँगे। दो में से एक बात हो जाएगी और हम योगी हो जाएँगे, मिल जाएँगे। तब या तो भगवान इतना घटिया हो जाएगा जैसे कि हम हैं या फिर हम भगवान जैसे बड़े हो जाएँगे। मिल जाएँगे फिर दो नहीं रह सकते। एक हो जाएँगे।

नाला मिला गंगा में

मित्रो! योगी बनने की आध्यात्मिक प्रक्रिया यही है कि जैसे नाला गंगाजी में शामिल हो जाता है तो नाला खतम हो जाता है। गंगा बाकी रहती है। नाला अपनी सारी की सारी क्षमता, अशुद्धता, स्वरूप, इच्छा, नाम, रूप सब कुछ खतम कर देता है और गंगाजी में शामिल हो जाता है। परिणाम क्या होता है? गुरु जी उसको तो बड़ा नुकसान हो गया। हाँ बेटे! बड़ा नुकसान हो गया, नाला बेचारा मारा गया। बेचारा किसी काम का नहीं रहा। नाले का नाम भी इस दुनिया से चला गया, खतम हो गया। नहीं बेटे! नाला खतम नहीं हुआ, वह जिंदा है, केवल परिष्कृत हो गया। परिष्कृत होकर के अब उसका नाम गंगा है। कल तक लोग उससे घृणा करते थे, नफरत करते थे, क्योंकि उसका पानी गंदा था। अब जबकि नाला गंगाजी में शामिल हो गया और गंगाजी में शामिल होने के बाद में उसका पानी भी गंगाजल हो गया तो लोग उसमें स्नान करते हैं, आचमन करते हैं। किसका?

"**जन्म शतभ्यं पीत्वा....।**" इसी गंदे नाले के पानी से लोग नहा रहे हैं, पानी भरकर ले जा रहे हैं। शंकर जी पर चढ़ा रहे हैं। तू भी उसमें से लोटे में भरकर ले जाना और देखना कि यह पानी खराब हो जाएगा क्या ? खराब नहीं हो सकता। अब यह सड़ेगा नहीं। क्यों ? क्योंकि अब यह गंगाजी में शामिल हो गया।

सामीप्य का चमत्कार

मित्रो! जब हम अपने व्यक्तित्व को, अपनी हस्ती को भगवान में शामिल कर देते हैं, तब हम योगी हो जाते हैं। तब मिलने का नाम योगी है, जैसे नदी और नाला मिल जाते हैं। बूँद और समुद्र मिल जाते हैं। बस, हम उसी तरीके से एक हो जाते हैं। चंद्रमा सूरज के नजदीक होता है और उसकी किरणों से प्रभावित होकर चमकने लगता है। चंद्रमा में चमक है ? चंद्रमा में कोई चमक नहीं है। वह मिट्टी का लोंदा है। जैसे हमारी जमीन मिट्टी की बनी है, वैसे ही चंद्रमा मिट्टी का बना हुआ है और सूरज

का प्रकाश ग्रहण करने के पश्चात वह चमकने लगता है। जीवंत हो उठता है। पारस के नजदीक जाकर के लोहा सोना हो जाता है। जब हम भगवान के नजदीक चले जाते हैं, उनमें घुल जाते हैं, पास बैठ जाते हैं, मिल जाते हैं तो हम नाले के तरीके से सम्मिलित होने के बाद में गंगा बन जाते हैं। पास जाने की बात चली तो मैं मान सकता हूँ कि लोहा पारस के पास जाता है। घुलता तो नहीं है, लेकिन पास जाने के बाद में कम से कम लोहे वाली शक्ल खतम हो जाती है और सोने वाली शक्ल शुरू हो जाती है। बच्चे के हाथ में डोरी के साथ लगी हुई पतंग हवा के साथ शामिल होने के बाद आसमान में उड़ती हुई कितनी ऊँची चली जाती है। धूल के कण और धूल के जर्रे हवा के साथ शामिल होने के बाद कहाँ तक चले जाते हैं? आसमान तक चले जाते हैं। राजा के मुकुट तक चले जाते हैं और मीनार तक चले जाते हैं। यही धूल के कण पहले चल नहीं सकते थे, ठोकरें खाते थे।

लिपट जाएँ भगवान से

साथियो! हम भगवान के साथ शामिल होने के पश्चात पतंग के तरीके से ऊँचे चले जा सकते हैं। धूल के कणों के तरीके से हवा के साथ शामिल होने के पश्चात कितने ऊँचे उठते हुए चले जा सकते हैं। हम बेल की तरह से पेड़ के साथ लिपटने की वजह से, जितना ऊँचा पेड़ है, उतने ऊँचे हम चले जा सकते हैं। बेल जमीन पर फैल सकती है, ऊँची नहीं उठ सकती। बेल को ऊँचा उठना हो तो क्या करना पड़ेगा? तब उसे किसी पेड़ का सहारा लेना पड़ेगा, तभी वह पेड़ के साथ-साथ उतने ऊँचाई तक जा सकती है, जितना ऊँचा पेड़ है। भगवान पेड़ का नाम है, जिसके साथ यदि हम लिपटने की कोशिश करें तो हम उतने ही बड़े बन सकते हैं, जितना कि स्वयं भगवान। लेकिन मित्रो! क्या होता रहता है कि हम भगवान को प्राप्त करने के तरीके नहीं जान पाते। हमारी तरकीब और हमारा दृष्टिकोण तथा हमारी इच्छा बड़ी फूहड़ और कमजोर

है। क्या इच्छा है? हम भगवान को थोड़ा सा प्रसाद चढ़ाना चाहते हैं, धूपबत्ती चढ़ाना चाहते हैं, नाम लेना चाहते हैं और क्या करना चाहते हैं? बस, यही करना चाहते हैं, नाम लेना चाहते हैं। हमारे पंडित जी ने बताया कि नाम लिया करो और क्या करेंगे? हाथ से फेरा-फेरी करेंगे, चावल रखेंगे, रोली रखेंगे, दक्षिणा रखेंगे, प्राणायाम करेंगे, न्यास करेंगे, माला पहनाएँगे।

अपनी मरजी से चलाएँगे भगवान को?

ठीक है, आप यह सब करेंगे, लेकिन इन सबके बदले में आप चाहते क्या हैं? यही चाहते हैं न कि इन सबके बदले भगवान हमारी मरजी के मुताबिक चलना शुरू करें। आपकी मरजी के मुताबिक? हाँ साहब! हमारी मरजी के मुताबिक भगवान को चलना चाहिए। आप यह क्या कह रहे हैं? जरा आप सोचिए तो सही, आखिर आप कहना क्या चाहते हैं। अगर आप ऐसा ख्याल रखते हैं कि आप भगवान को नसीहत देने की स्थिति में हैं

और भगवान के ऊपर हुकूमत चलाने की स्थिति में हैं, आप भगवान को गलतियाँ बताने की स्थिति में हैं तो आप अपने बारे में गलत ख्याल लगाकर बैठे हैं और आप झूठी हिमाकत करने पर उतारू हो गए हैं। हाँ गुरु जी! हमारे पैर दबा दीजिए। बेटे! हम तो तेरे गुरु हैं, हम कैसे दबाएँगे? अच्छा तो आप ऐसा कीजिए कि हमारी धोती धोकर लाइए। बेटे! हम तेरे गुरु हैं, हमारी धोती तू धोकर ला। वाह गुरु जी! हमने तो इसीलिए आपको गुरु बनाया था कि आप हमारी धोती धोइए। बेटे! ये तो तू गलती करता है। तू हमारे साथ गुस्ताखी से पेश आता है। अच्छा तो आप ऐसा कीजिए, हमारी तेल मालिश कर दीजिए। धत तेरे की, तू बड़ा पागल आदमी मालूम पड़ता है। तुझे यह नहीं मालूम कि हम तेरे गुरु हैं और तू हमारा चेला है। हाँ गुरु जी! चेला हूँ, इसीलिए तो चलाता हूँ। नहीं बेटे! चेला कभी नहीं चला सकता।

कर्म व्यवस्था से खिलवाड़

मित्रो! गुरु वह होता है, जो सिखाता है और शिष्य उसे कहते हैं, जो सीखता है। भगवान उसे कहते हैं जो हुक्म चलाता है, जो निर्देश देता है और भक्त उसे कहते हैं, जो भगवान के आदेशों को, आदर्शों को स्वीकार करने के लिए अपना कदम आगे बढ़ाता है और तू क्या करता है? महाराज जी! हम तो मनोकामना पूरी करा लेना चाहते थे। मनोकामना पूरी कराने की मंशा लेकर के तू गलती करता है। एक गलती यह करना चाहता है कि स्वयं के ऊपर, संसार के ऊपर, मनुष्यों के ऊपर जो कर्म-व्यवस्था लागू की गई है, उस कर्म-व्यवस्था को तू मटियामेट करने को उतारू हो गया है। सारी की सारी सृष्टि जो चल रही है यह कर्म-व्यवस्था से चल रही है। समूचा संसार कर्म-व्यवस्था के आधार पर चल रहा है। कर्म के आधार पर हम अच्छे फल प्राप्त कर सकते हैं, बुरे फल प्राप्त करते हैं। कर्म के आधार पर हम पुरुषार्थ करते हैं। कर्म के आधार पर हम उन्नति

करते हैं। कर्म दुनिया के लिए एक व्यवस्था है। तू क्या चाहता है ? साहब ! कर्म के द्वारा जो अच्छे फल मिलने चाहिए, वह हम कर्म की अपेक्षा पूजा और पाठ के उपरांत पाना चाहते हैं। बेटे ! पूजा और पाठ करके कर्म का फल प्राप्त करना चाहेगा, तब तो दुनिया में कोई भी आदमी कर्म करना नहीं चाहेगा। हर आदमी पूजा-पाठ करना चाहेगा। लक्ष्मी को पाने के लिए हर आदमी लक्ष्मी स्तोत्र का पाठ करना चाहेगा। तब कोई भी आदमी दुकानदारी नहीं करेगा, व्यापार नहीं करेगा, खेती-बाड़ी नहीं करेगा।

मनोकामना का खेल

अगर आप कर्म के फल को नहीं समझना चाहते तो कामना की बात कहकर के क्या करने चले हैं ? इसकी प्रतिक्रिया क्या हो सकती है और क्या परिणाम हो सकते हैं, आप जानते नहीं ? जिस आदमी को जो दंड मिलना चाहिए, जो सजा मिलनी चाहिए, आपका क्या यह ख्याल है कि थोड़ा-बहुत पूजा-पाठ करने से दंडों को कम किया जा सकता है ?

आप दुनिया में एक ऐसी नई व्यवस्था कायम कराना चाहते हैं कि किसी आदमी को गलत काम करने की सजा नहीं मिलनी चाहिए। अच्छी उन्नति करने के लिए किसी को कोई परिश्रम नहीं करना चाहिए और सारे के सारे काम पूजा-पाठ से पूरे होने चाहिए। क्या आप यही कहने चले थे? इसका परिणाम क्या होगा? कभी सोचा है कि यह दुनिया कैसे जिएगी? दुनिया के कायदे कैसे रहेंगे, दुनिया के नियम कैसे चलेंगे? दुनिया की व्यवस्था कैसे कायम रह पाएगी? बता बेटे! तू क्या कह रहा था? नहीं साहब! मैं तो मनोकामना की बात कह रहा था। बेटे! मनोकामना की बात तो ठीक है, पर इसका होगा क्या? भगवान अपनी सारी की सारी सृष्टि को एक कायदे के आधार पर, कानून के आधार पर, नियम के आधार पर चला रहा है। उस भगवान का क्या होगा, जो सूरज को कायदे पर चला रहा है, चंद्रमा को कायदे पर चला रहा है। गेहूँ में से गेहूँ पैदा कर रहा है, मक्के में से मक्का पैदा कर रहा है। गाय के पेट में से गाय का

बच्चा पैदा हो रहा है। बकरी के पेट में से बकरी का बच्चा पैदा हो रहा है। कायदे के ऊपर सारी की सारी सृष्टि का नियम चल रहा है।

यह कैसा पागलपन?

आप क्या कह रहे थे भगवान से? भगवान से मैं यह कह रहा था कि हमारे कर्मों के फल को आप हटाइए और हमारे पूजा-पाठ के आधार पर नई व्यवस्था कायम कीजिए। अच्छा बेटे! भगवान की सृष्टि का जो क्रम है उस व्यवस्था को आप गलत करना चाहते थे? हाँ साहब! यही चाहता था कि कम से कम हमारे लिए भगवान अपने कायदे-कानून, नियम-व्यवस्था सब बिगाड़ दे। क्यों? आपके लिए ही क्यों बिगाड़ दे? क्या आप कहीं सोने के बने हुए हैं? बिगाड़ेगा तो सबके लिए बिगाड़ेगा, लेकिन अगर अपने नियम, व्यवस्था बिगाड़ेगा तो मैं आपसे यह पूछता हूँ कि दुनिया जिंदा रहेगी या मरेगी? नहीं महाराज जी! हमारी मनोकामना पूरी करा दीजिए। बेटे! तू पागल है। मित्रो! भक्त के लिए मनोकामना जैसा कोई प्रश्न

ही नहीं उत्पन्न होता। भक्ति के द्वार में यदि आप प्रवेश करना चाहें और भक्ति को कभी आप जानना चाहें, तब आपको नए तरीके से विचार करना होगा। सोचने के वर्तमान तरीके सारे के सारे आपको बदल देने पड़ेंगे, फिर आपको नए सिरे से भक्ति का शुभारंभ करना होगा। भक्ति के सिद्धांत नए सिरे से कायम करने पड़ेंगे, फिर आपको इस तरीके से भक्ति के सिद्धांत प्रतिपादित करने पड़ेंगे कि हमारा 'बॉस' जो हुक्म चलाएगा, वह हम मानेंगे। आप अपने 'बॉस' से पूछिए कि आप हुक्म दीजिए, हम आपकी मरजी के मुताबिक चलेंगे।

मिलिटरी बनाम अध्यात्म

मित्रो! फौज का कप्तान हुक्म देता है और सिपाही कहना मानता है। मिलिटरी का सारा डिसिप्लिन, अनुशासन इस बात पर टिका हुआ है कि कप्तान हुक्म दे और सिपाही उसके अनुसार चले। नहीं साहब! सिपाही हुक्म दे और कप्तान चले तब? तब बेटे! मिलिटरी का सर्वनाश हो जाएगा, सत्यानाश हो जाएगा। सारे के सारे सिपाहियों में से

कोई क्या कहेगा, कोई क्या कहेगा, कप्तान का कहना नहीं मानेगा। इससे कप्तान का दिमाग खराब हो जाएगा, वह पागलखाने चला जाएगा। मिलिटरी का सारा आधार इस बात पर टिका हुआ है कि कप्तान को हुक्म देना चाहिए और सबको मानना चाहिए। यही शिक्षण आध्यात्मिकता का भी है। इसका शिक्षण है कि कठपुतली के तरीके से हमको अपने आप को भगवान के सुपुर्द करना चाहिए और भगवान से यह कहना चाहिए कि आप हुक्म चलाइए और हम आपकी मरजी के मुताबिक उसे कर दिखाएँगे। स्त्री और पुरुष का अर्थ पति-पत्नी का उदाहरण यहाँ ऐसा फिट, सही बैठ जाता है। कैसे? स्त्री और पुरुष दोनों की शादी हो जाती है। स्त्री अपनी हया और शरम, इज्जत और आबरू, मन की इच्छा, रहन-सहन का तरीका अपने मर्द के कहने के अनुसार बदल देती है और मर्द अपने पास जो संपत्ति है, जमीन जायदाद है, अपना वंश, गोत्र सब कुछ स्त्री के सुपुर्द कर देता है। एक के सुपुर्द करने से

दूसरा अपने आप को सुपुर्द कर देता है। भगवान से अगर आप यह चाहते हों कि वह अपनी संपदाएँ आपके सुपुर्द कर दे, आपको अपनी विभूतियाँ सुपुर्द कर दे, अपने क्रिया-कलाप सुपुर्द कर दे तो उसकी कीमत कम से कम इतनी तो चुकानी चाहिए कि हम उससे ये कहें कि हम आपकी मरजी के मुताबिक चलेंगे। इसी का नाम समर्पण है।

समर्पण और सोऽहम्

समर्पण किसे कहते हैं? योग किसको कहते हैं? समर्पण को कहते हैं। उस योग को सिखाने के लिए हमने स्वर्ण जयंती साधना वर्ष में 'सोऽहम्' की उपासना के ऊपर बहुत ध्यान दिया। गायत्री का जप करने के पहले आप में से हर एक आदमी को यह कहा कि आप 'सोऽहम्' की उपासना किया कीजिए। गुरु जी ये 'सोऽहम्' क्या होता है? बेटे! 'सोऽहम्' उसे कहते हैं कि जब हमारी श्वास भीतर जाए तो हमको यह ध्यान करना चाहिए कि हमारे भीतर जो हवा जाती है उसके भीतर एक बहुत

बारीक आवाज होती है—सोऽऽऽ। और जब श्वास बाहर निकला करे, तब भी ये ख्याल करना चाहिए कि हमारे भीतर से एक आवाज आती है—'हम'। सोऽऽऽ भीतर की ओर जाने वाली आवाज और 'हम' बाहर निकलने वाली। महाराज जी! इसे तो हम करते भी हैं और अच्छा भी लगता है। कभी तो यह आवाज सुनाई पड़ती है और कभी नहीं सुनाई पड़ती। बेटे! सुनाई पड़ती है तो कोई हर्ज नहीं है और नहीं सुनाई पड़ती है तो भी कोई हर्ज नहीं है। इसकी वास्तविकता को समझें कि यह है क्या? 'सोऽ' माने—भगवान और 'हम' माने—मैं। हम और भगवान दोनों एक होते हैं। भगवान हमारे भीतर प्रवेश करता है नाक में से श्वास के साथ-साथ और 'हम' माने 'मैं' या अपनापन, मैंपन श्वास के साथ हम बाहर निकाल देते हैं। अर्थात अब मैं की सत्ता खतम, अहं की सत्ता खतम और भगवान का स्वामित्व हमारे जीवन के ऊपर स्थापित। अब भगवान ही हमारा स्वामी है। हम भगवान के गुण

गाते हैं। आज से अपनी सारी की सारी चीजें भगवान की हुईं।

भावना में है, प्रबल शक्ति

मित्रो! यह हमारी भावनाओं की शक्ति है, जो मिट्टी में से भगवान पैदा कर देती है, जो मिट्टी में से द्रोणाचार्य तैयार कर देती है, जो मिट्टी के टुकड़े में से गिरधर गोपाल पैदा कर देती है। यह हमारी भावना शक्ति है जो पत्थर के टुकड़े में से काली पैदा कर देती है और पत्थर में से गणेश पैदा कर देती है और मनुष्यों में से भगवान पैदा कर देती है और मामूली से आदमी को गुरु बना देती है। यह सारी की सारी शक्ति बेटे! भावना की शक्ति है। भावना के बारे में मैं कैसे व्याख्या करूँ; इसे आपको समझाना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि भावना के क्षेत्र को आपने कभी छुआ तक नहीं। भावना में कितनी सामर्थ्य होती है, यह आपने कभी जाना तक नहीं। भावना का जादू, भावना का चमत्कार यही है। अध्यात्म वास्तव में भावना का चमत्कार है, जिससे आप

रहित हैं। कामनाओं में डूबे हुए आदमी, वासनाओं में डूबे हुए आदमी भावना के बारे में कल्पना तक नहीं कर सकते। आपको मैं कैसे बताऊँ, कैसे समझाऊँ, किन शब्दों में समझाऊँ, ताकि आप भावना का महत्त्व, श्रद्धा का महत्त्व समझकर संवेदना का महत्त्व समझ पाएँ कि यह कितनी बड़ी चीज है? इसमें से जर्रे-जर्रे में हमको भगवान दिखाई पड़ सकता है और वस्तुओं में से भगवान हमारे सामने आ सकता है—श्रद्धा के माध्यम से। मित्रो! तीन शक्तियाँ हमारे पास हैं और 'सोऽहम्' की उपासना के माध्यम से हम उन तीनों शक्तियों को तीव्र करते हैं, प्रखर करते हैं। इसके द्वारा हम अपनी तीनों चीजों को भगवान के सुपुर्द कर देते हैं और यह कहते हैं कि आप हुक्म कीजिए। हमारे क्रिया-कलाप और हमारे कार्य आपकी मरजी के मुताबिक हों।

अपनी मरजी भगवान पर मत थोपिए

मित्रो! भगवान से आप यह मत कहिए कि आप हमारी मरजी के मुताबिक अपना कर्म करें। यह

गुस्ताखी आप मत कीजिए। ऐसा कहने से पहले आप अपनी जबान बंद कीजिए और यह सोचिए कि आप कहने क्या जा रहे हैं? अरे, आप यह कहिए कि हे भगवान! हम आपकी मरजी के मुताबिक काम करेंगे। कठपुतली के धागे बाजीगर के हाथ में बँधने चाहिए और कठपुतली को यह जुर्रत दिखानी चाहिए कि हम आपके इशारों पर नाचना शुरू करेंगे। कठपुतली को यह नहीं कहना चाहिए कि आप हमारी मरजी के मुताबिक काम कीजिए। आपकी मनोकामना की कोई कीमत नहीं होती। अगर कोई कीमत हो सकती है तो केवल भगवान की मनोकामना की हो सकती है। जब आप अपनी मनोकामनाएँ भगवान के ऊपर लादने के लिए उतारू हो जाते हैं, तब फिर आप उस पुरानी वाली घटना, जो बड़ी नासमझी की मालूम पड़ती है, उसी घटना की आप नकल बनाते हैं। कौन सी घटना की? उस घटना की जिसमें कि नारद जी विष्णु भगवान के पास एक दिन गए और यह कहने लगे कि हमारी मनोकामना पूरी

कर दीजिए। भगवान को बड़ा आश्चर्य हुआ। भक्ति और मनोकामना, भक्त की जिंदगी में एक साथ कैसे हो सकती हैं? भक्त के भीतर मनोकामना बैठ गई तो फिर भक्ति कैसे आ जाएगी? भक्ति आएगी तो मनोकामना नहीं रहेगी और मनोकामना आ जाएगी तो भक्ति नहीं रह सकती।

नारद मोह

नारद जी मनोकामना की बात लेकर के गए थे। भगवान को बड़ा अचंभा हुआ। आज मैं क्या देख रहा हूँ और क्या सुन रहा हूँ? नारद के मुँह से क्या निकल रहा है, लेकिन हमारे आपके तरीके से नारद जी अपने स्वार्थ में इस कदर हावी थे कि अपनी ही बात कहते चले गए। उन्होंने भगवान जी के ऊपर हुक्म चलाया और निर्देश दिया कि हमारा कहना मानिए, हमारा हुक्म मानिए। क्या हुक्म है आपका? हमारा विवाह करा दीजिए। अरे नारद! तू बूढ़ा हो गया है मरने के दिन आ गए। अब तू विवाह करके क्या करेगा? नहीं साहब! हम तो विवाह

करना चाहते हैं और न केवल विवाह करना चाहते हैं, वरन मालदार भी बनना चाहते हैं। आज हर मनुष्य के सामने दो ही कामनाएँ हैं, तीसरी कोई नहीं है। आदमी अमीर बनना चाहता है और ऐयाशी करना चाहता है। ऐयाशी और अमीरी के अलावा और कोई ख्वाहिशें नहीं हैं। नारद जी ने भी दोनों ही ख्वाहिशें भगवान के सामने रख दीं। हम और आप भी घुमा-फिराकर वही दो बातें रखते हैं, तीसरी कोई बात है ही नहीं तो आप रखेंगे कहाँ से। नारद जी ने कहा कि वहाँ स्वयंवर होने वाला है और उस लड़की से हम विवाह करने वाले हैं। हमको दहेज का पैसा भी चाहिए और लड़की भी चाहिए। वासना भी चाहिए और तृष्णा भी चाहिए।

भगवान भक्त की कामना का अंत करते हैं

भगवान जी सोचते रहे कि भाई! यह क्या हो रहा है? उन्होंने विचार किया कि मेरा भक्त पाप के इस पंक में डूबेगा तो हजार जन्म में भी मुझ तक नहीं पहुँच सकेगा। इसलिए इसकी कामनाओं को

खतम करना पड़ेगा। कामनाओं को पूरा करने से ये कैसे पूरी हो सकती हैं। एक के बाद दो, दो के बाद सौ, सौ के बाद हजार होती चली जाएँगी। अतः कामनाओं को शुरुआत में ही खतम कर देना चाहिए। भगवान भक्त की कामना को खतम करते हैं। नारद जी जब स्वयंवर में गए तो एक सुंदरी माला लेकर के आई और बस, सबको माला दिखाती फिरी। नारद जी को भी दिखाई, वह भी बैठे हुए थे। एक राजकुमार को माला पहनाकर चली गई। नारद जी को बहुत बुरा लगा। वे भगवान विष्णु के पास गए और वही शिकायत करने लगे, जो आप में से हर आदमी करता हुआ पाया जाता है। आपमें से हर एक आदमी की शिकायत है कि हमारी मनोकामनाएँ पूरी नहीं कीं। किसने पूरी नहीं कीं? साहब! मंसा देवी ने नहीं कीं, चंडी देवी ने पूरी नहीं कीं, हनुमान जी ने पूरी नहीं कीं, साँईं बाबा ने पूरी नहीं कीं, आचार्य जी ने पूरी नहीं कीं, किसी ने भी पूरी नहीं कीं। सब खराब हैं और सब बेकार हैं और सब ठग हैं। इनमें

से कोई भी हमारी मनोकामना पूरी नहीं कर सकता। आपका यही कहना है ना? जी हाँ, यही कहना है।

हमारी शिकायत, भगवान का जवाब

मित्रो! नारद जी भी यही कहते थे। नारद जी की जब मनोकामना पूरी नहीं हुई, तब वे भगवान जी के पास गए और गालियाँ सुनाने लगे। गालियाँ सुनाने के बाद नारद जी जब शांत हो गए, तब विष्णु भगवान ने कहा कि एक बात बताओ नारद? मैंने अपने भक्तों में से किस-किस की मनोकामना पूरी की है? एक भी ऐसे आदमी का नाम बता दीजिए कि जिसकी मैंने मनोकामना पूरी की है? मैंने हर एक आदमी की मनोकामना को परिष्कृत किया है, स्वच्छ किया है, निर्मल बनाया है। मैंने किसी की मनोकामनाएँ पूरी नहीं की। अगर मैं मनोकामना पूरी करने लगूँगा तो जैसे कमीने और घटिया आदमी हैं, उससे भी ज्यादा घटिया और कमीना मुझे बनना पड़ेगा और लोगों के कहने के मुताबिक मैं ऐसा नहीं बन सकता। लोग मुझसे जो काम कराना चाहते हैं

और जिस काम के लिए मेरा इस्तेमाल करना चाहते हैं, मैं उनको अपने आपका इस्तेमाल नहीं करने दूँगा। लोगों की मरजी हो तो मेरे पास आएँ और मरजी न हो तो अपने घर बैठें। नहीं साहब! लोग तो यही कहते हैं कि भगवान जी हमारा हुक्म मानेंगे और हमारी मरजी के मुताबिक चलेंगे और हमारी मनोकामना पूरी करेंगे। नहीं बेटे! ऐसा नहीं हो सकता। हाँ, यदि आप भगवान की मनोकामना पूरी करें तो शायद हो सकता है कि भगवान जी आपकी मनोकामना पूरी कर दें, लेकिन आप तो अपनी मनोकामना पूरी कराना चाहते हैं और भगवान की मनोकामना पूरी करना ही नहीं चाहते। यह कैसे हो सकता है? आज की बात समाप्त।

॥ ॐ शांतिः ॥

❐

मुद्रक—युग निर्माण योजना प्रेस, मथुरा (उ. प्र.)